छपरा के भगवान बाजार थाना क्षेत्र के पंचायतन शिव मन्दिर का ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक सर्वेक्षण

डॉ0 श्याम प्रकाश (गोल्डमेडलिस्ट, पुरातत्त्व वैज्ञानिक)

अतिथि प्राध्यापक, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

छपरा (सारण) बिहार प्रान्त का एक जनपद है जो 25^0 36′ उत्तरी अक्षांश से लेकर 26^0 13′ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 24′ पूर्वी देशान्तर से 85^0 15′ पूर्वी देशान्तर के मध्य बिहार की राजधानी पटना से लगभग 69 किमी0 की दूरी पर घाघरा नदी के उत्तरी भाग में स्थित है। सारण एक प्रमण्डल है जिसकी दक्षिणी सीमा गंगा और घाघरा नदियों से परिवेष्ठित है।[1] इस जनपद की जलवायु ग्रीष्म ऋतु में शुष्क तथा ठण्डी के दिनों में आनन्द दायक हो जाती है। यहाँ के एक वर्ष को चार भागों में बांटा जा सकता है। इस क्षेत्र की वनस्पतियों में पीपल, बरगद, इमली, आम, सेमल, गोल्ड मोहर, बांस, नरकट, चिबिल, विभिन्न प्रकार के फूल आदि प्राप्त हाते हैं। जनपद के उत्तर–पश्चिम में सीवान जनपद, उत्तर–पूरब में मुज़फ्फरपुर जनपद, दक्षिण–पूरब में वैशाली जनपद, दक्षिण में पटना जनपद तथा दक्षिण–पश्चिम में भोजपुर जनपद स्थित है।[2]

विश्व मानचित्र में भारत एवं भारत में छपरा की स्थिति तथा मन्दिर का सेटेलाइट से लिया गया दृश्य (चित्र सं0–1 से 2)

जनपद के नामकरण से सम्बन्धित दो विचार धाराएं दिखलायी पड़ती हैं। प्रथम के अनुसार जनपद का नाम सारंग अरण्य के नाम पर सारण पड़ा। सम्भवतः सारंग अरण्य हिरण (सारंग) वाला वन (अरण्य) था। कालान्तर में इसका अपभ्रन्श रूप सारण हो गया।[3] वर्तमान से लगभग 4500 वर्ष पूर्व यह क्षेत्र वनाच्छादित था इसमें बड़ी संख्या में हिरण विचरण किया करते थे। विश्व प्रसिद्ध नव पाषाणिक पुरास्थल चिरांद जो जनपद मुख्यालय से मात्र 11 किमी0 की दूरी पर स्थित है, के पुरातात्त्विक उत्खनन से भी अनेक हिरण एवं बारहसिंघों की हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं।[4]

चिरांद (सारण) से प्राप्त हिरण की हड्डियां एवं श्रृंग, पुरातत्त्व विमर्श से साभार (चित्र सं0–3)

द्वितीय मत के अनुसार छठीं शताब्दी ई0 पू0 में इस क्षेत्र के निवासी बड़ी संख्या में बौद्ध धर्म अपनाकर तथागत बुद्ध के शरणागत हो गये थे इसी लिए इस क्षेत्र का नाम शरणागत से कालान्तर में सारण हो गया।[5] इस जनपद का सम्बन्ध पौराणिक राजा मयूरध्वज से स्थापित किया जाता है।[6] मुगल कालीन ग्रन्थ बाबरनामा में भी छपरा (सारण) का उल्लेख प्राप्त होता है।[7] छपरा का इतिहास अत्यन्त गौरव पूर्ण रहा है। 17वीं शताब्दी में डच व्यापारियों ने यहाँ एक कोठी का निर्माण कराया था जो वर्तमान में सारण जिलाधिकारी का कार्यालय है। कालान्तर में फ्रांसीसी एवं पुर्तगाली व्यापारियों ने भी अपनी–अपनी कोठियाँ स्थापित कीं इनके द्वारा इस जनपद के नदी मार्ग से शोरे को व्यापार के निमित्त कलकत्ता भेजा जाता था।[8] शहर के उत्तर–पश्चिम में ढाला नामक स्थान के समीप डच व्यापारियों का कब्रिस्तान निर्मित है। अनेक समस्याओं के पश्चात लगभग 1864 ई0 में यहाँ नगर पालिका परिषद की स्थापना की गयी।[9] सारण अनेक क्रान्तिकारियों का जन्म स्थान रहा है। इन क्रान्तिकारियों में जय प्रकाश नारायण[10] का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। छपरा प्रमण्डल में ब्रिटिश कालीन छोटे–बड़े अनेक स्मारक विद्यमान हैं जिनमें अनेक मन्दिर–मस्ज़िद, चर्च, गुरुद्वारों आदि का प्रमुखता से उल्लेख किया जा सकता है।

यहाँ के स्थानीय निवासी डॉ0 इन्द्रकान्त (अतिथि प्राध्यापक, इतिहास विभाग, नन्दलाल सिंह कॉलेज, जय प्रकाश विश्वविद्यालय की अंगीभूत इकाई, दाउदपुर, बिहार) के सहयोग से छपरा शहर के भगवान बाज़ार थाना मोहल्ले में स्थित लगभग 150–200 वर्ष प्राचीन एक शिव मन्दिर को प्रकाश में लान के लिए इस मन्दिर का सर्वेक्षणात्मक पुरातात्त्विक अध्ययन कार्य किया गया। इस मन्दिर का निर्माण किन लोगों द्वारा कराया गया इस विषय में सूचना का अभाव है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इस मन्दिर को यहाँ रह रहे व्यापारिक वर्ग द्वारा निर्मित कराया गया होगा। बहुत सम्भव है कि इसका निर्माण यहाँ रह रहे किसी सेठ महाजन अथवा जमींदार द्वारा कराया गया हो। स्थानीय लोगों से बहुत पूंछने के बाद भी इस मन्दिर के इतिहास के विषय में कोई ठोस प्रमाण नही प्राप्त किया जा सका जो लेखक के लिये चिन्ता का विषय है। इतना अवश्य ज्ञात है कि मन्दिर के स्वामित्व को लेकर कुछ स्थानीयों में विवाद चल रहा है।

यह मन्दिर 25^0 47′ 7.27″ उत्तरी अक्षांश तथा 84^0 43′ 21.47″ पूर्वी देशान्तर के मध्य छपरा रेलवे जंक्शन से मात्र 600 मी0 की दूरी पर भगवान बाज़ार थाना क्षेत्र में छपरा–सीवान मुख्य सड़क मार्ग के दाहिनी तरफ एक विशाल प्रांगण के मध्य में आयताकार ऊँची जगती पर स्थित है। यहाँ टेम्पो, आटो, बस तथा निजी वाहन द्वारा पहुँचा जा सकता है। मन्दिर में प्रवेश करने के लिए पांच तरफ से प्रस्तर के सोपान बनाये गये हैं। मन्दिर का गर्भगृह पूर्वाभिमुख है। गर्भगृह से संलग्न काष्ठ निर्मित अलंकृत द्वार शाखा के ललाट बिम्ब पर लघु गणेश प्रतिमा का अंकन किया गया है। ललाट बिम्ब पर स्थापित देव प्रतिमा को देखकर गर्भगृह में स्थापित देवता के विषय में अनुमान लगाया जा सकता है। ढंके हुए प्रदक्षिणापथ से बने इस मन्दिर के चारों कोनों पर एक–एक लघु मन्दिर निर्मित हैं जिनके गर्भगृह में अनेक हिन्दू देवी–देवताओं की प्रतिमाएं स्थापित हैं। मुख्य मन्दिर के गर्भगृह में काले पत्थर पर निर्मित एक अर्घा युक्त शिवलिंग स्थापित है जो चारों तरफ लाल रंग से रंगे पत्थरों से घिरा हुआ है। शिवलिंग पर जलाभिषेक करने के पश्चात् अर्घे की सहायता से जो जल बाहर निकल

कर जाता है उसके लिए प्रदक्षिणापथ के समीप में एक चैम्बर बना हुआ है। नाली के जल निकास भाग पर पीले रंग से रंगे नन्दी के मुख भाग का अंकन अत्यन्त मनमोहक है।

अलंकृत प्रवेश द्वार (चित्र सं0–4), काले पत्थर पर निर्मित शिवलिंग, (चित्र सं0–5), नाली के जल निकास भाग पर पीले रंग से रंगे नन्दी का मुख भाग (चित्र सं0–6)

मन्दिर का तल विन्यास आयताकार है। इस मन्दिर के तल (फर्श) को पत्थरों से आच्छादित किया गया है। मन्दिर के पश्चिम दिशा में स्थित प्रस्तर निर्मित सोपान श्रृंखला के दोनों किनारों पर मगरमच्छ द्वारा मछली को निगलते हुए दर्शाया गया है जो प्रस्तर शिल्प का अनूठा नमूना है। मगरमच्छ एवं मछली दोनों अत्यन्त अलंकृत एवं सजीव प्रतीत हो रहे हैं।

सोपान श्रृंखला के दोनों तरफ प्रस्तर निर्मित मछली को निगलते हुये मगरमच्छ (चित्र सं0–7 एवं 8)

मन्दिर का उर्द्धव विन्यास अत्यन्त आकार्षक है। जगती के ऊपर थोड़े–थोड़े अन्तराल पर आठ अलंकृत स्तम्भ लगे हुए हैं जिनके ऊपर छत दिखलायी पड़ती है। छत के ऊपर सात रथों से युक्त मन्दिर का शीर्ष भाग निर्मित है। रथों के ऊपर चक्रांकित छज्जा है, छज्जों के ऊपर अनेक उरुश्रृंग बने हुए हैं। मुख्य मन्दिर के शीर्ष भाग की तरह इन उरुश्रृंगों में पीठिका, आमलक, खपुरि, कलश तथा आयुधों का अंकन किया गया है। मुख्य मन्दिर सहित ये देखने में त्रिभुजाकार प्रतीत होते हैं। मुख्य मन्दिर के शीर्ष भाग के एक आले में हनुमान की लघु प्रतिमा स्थापित है जो दाहिने हाथ में गदा तथा बाएं हाथ में पर्वत लिये हुए हैं। मुख्य मन्दिर के अतिरिक्त अन्य चारों लघु मन्दिर पंचरथ योजना में निर्मित हैं। यह मन्दिर, मन्दिर स्थापत्य की उत्तर भारतीय नागर शैली के निकट तथा स्थानीय शैली में निर्मित है।

मन्दिर में निर्मित इन आठ प्रवेश द्वारों पर इण्डो–फार्सियन शैली की छाप स्पष्ट दृष्टिगत है। मन्दिर के छत की विताने भी अलंकृत थीं किन्तु अब वे नष्ट प्राय हो गयी हैं। ऊपर से किया गया अलंकरण हटने के कारण छत में लगी लाखौरी ईंटें स्पष्टरूप से देखी जा सकती हैं। केवल गर्भगृह के अन्दर की वितान का अलंकरण अभी लगभग सुरक्षित है।

पंचायतन शिव मन्दिर छपरा (सारण) लगभग 150 से 200 वर्ष प्राचीन, (चित्र सं0–9), गर्भगृह के छत का अलंकृत वितान (चित्र सं0–10)

भारतीय इतिहास में लाखौरी अथवा लाहौरी ईंटो तथा बजरी सरेस, गोंद, गुड़ तथा चूने इत्यादि की सहायता से स्थापत्य अथवा भवन निर्माण की प्रकिया सल्तनत काल से प्रारम्भ होकर ब्रिटिश काल तक आती है। स्थानीय निवासियों के अनुसार चूंकि इस मन्दिर का निर्माण 1857 के पश्चात् हुआ है अतः यह ब्रिटिश कालीन माना जा सकता है। भारत सरकार द्वारा पारित **पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम 1972** के अनुसार 5 अप्रैल सन् 1976 को संशोधित अधिनियम के द्वारा मानव निर्मित वस्तुएं जो 100 वर्ष से अधिक प्राचीन हैं तथा जिनका ऐतिहासिक, कलात्मक, धार्मिक, राजनीतिक एवं संग्रहालयीय महत्व है, को पुरावशेष मानते हुए प्रकाशित एवं संरक्षित करने का उल्लेख किया गया है।[11] चूंकि यह मन्दिर 150 वर्ष से अधिक प्राचीन है अतः इसका पुरातात्त्विक महत्व है। इस मन्दिर का पुरातत्त्वीय महत्व होने के कारण इसका संरक्षण एवं संवर्द्धन अत्यावश्यक है अन्यथा मन्दिर का स्थापत्य एवं मण्डप की कला पूर्णतः विनष्ट हो जायेगी ऐसी स्थिति में इनको पुनः पूर्ववत् अवस्था में ला पाना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन हो जायेगा। इसके मूल रूप को संरक्षित करके ही इसकी विशेषताओं के विषय में अध्ययन किया जा सकता है।

मन्दिर परिसर में एक बैठका (मण्डप) बना हुआ है। बहुत सम्भव है कि इसका प्रयोग विशेष धार्मिक अवसरों पर दर्शनार्थियों द्वारा किया जाता होगा। प्रस्तर एवं काष्ठ से निर्मित यह बैठका मुग़ल कालीन दीवाने आम एवं दीवाने ख़ास जैसा प्रतीत होता है। मण्डप में अनेक प्रस्तर स्तम्भ लगे हुए हैं जो अलंकृत हैं। किसी समय इन स्तम्भों पर प्लास्टर किया गया था किन्तु अब वह उखड़ चुका है।

मण्डप में प्रस्तर पर लगा प्लास्टर युक्त अलंकृत स्तम्भ (चित्र सं0–11)

मण्डप के बाहरी भाग में प्रस्तर के सादे स्तम्भ लगाये गये हैं जिनमें पत्थर के जाली का वातायन बना हुआ है। मण्डप की छत लकड़ी के शहतीरों की सहायता से निर्मित हैं जो कहीं–कहीं पर टूट चुकी है। इस मण्डप के मध्य भाग में एक आयताकार चबूतरा बना हुआ है। स्थानीय मानते हैं कि इस पर यज्ञादि कर्मकाण्डों को सम्पादित किया जाता था। बहुत सम्भव है कि इस चबूतरे का प्रयोग विश्राम करने के लिए किया जाता रहा हो। इस मण्डप में अनेक अश्वपाद के आकार के खुले प्रवेश द्वार निर्मित हैं जो इण्डो फार्सियन शैली के प्रतीत हो रहे हैं। मण्डप में मध्य भाग के चबूतरे के ऊपर कार्निस भाग पर, चारों कोनों पर अनेक पौराणिक कथाओं का चित्रांकन किया गया है जिनमें से कुछ धूमिल तथा कुछ पूर्णतः नष्ट हो चुके हैं।

पौराणिक आख्यानों से अलंकृत मण्डप का कार्निस भाग (चित्र सं0–12)

पौराणिक आख्यानों से अलंकृत मण्डप का कार्निस भाग (चित्र सं0–13)

पौराणिक आख्यानों में विष्णु का मत्स्यावतार, वराह अवतार, शेषशायी विष्णु, चतुर्भुजी विष्णु, हिरण्यकशिपु वध का दृश्य, चतुर्भुजी गणेश, राधा–कृष्ण की प्रेम लीला के दृश्य, राम, सीता, लक्षमण तथा पादानुध्यात हनुमान का चित्रांकन, कृष्ण द्वारा कालिया दमन का दृश्य, काली के अनेक रूपों का चित्रांकन, पर्वत उठा कर वायु मार्ग से उड़ते हुए हनुमान का चित्रांकन इत्यादि महत्वपूर्ण है। इनके अतिरिक्त मण्डप के खुले प्रवेश द्वारों पर भी लेप लाकर चित्रांकन किया गया था किन्तु अब ये लेप पूर्णतः विनष्ट हो चुका है जिस कारण से इन पर अंकित चित्रों को पहचानना अत्यन्त कठिन है। यदि इन चित्रों का रासायनिक परीक्षण किया जाये तो सम्भवतः कुछ अन्य पौराणिक महत्व के चित्रों को पहचाना जा सकता है।

इण्डो–फार्सियन शैली में निर्मित अलंकृत प्रवेश द्वार (चित्र सं0–14)

कुल मिलाकर सम्पूर्ण मण्डप अलंकृत एवं चित्रों से सुशोभित था किन्तु समय के प्रवाह में धीरे–धीरे ये महत्वपूर्ण धरोहर क्षरित होती गई। यदि यहाँ रह रहे स्थानीय लोगों द्वारा इस धरोहर की महत्ता को समझकर इसको संरक्षित कर लिया गया होता तो आज यह अलंकृत मण्डप भारत की अन्य चित्रित गुफाओं के सदृश प्रकाशमान हो रहा होता।

प्रस्तर एवं काष्ठ से निर्मित अलंकृत मण्डप (चित्र सं0–15 एवं 16)

सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि सम्पूर्ण मन्दिर मोटे प्लास्टर से लेपित था। कालान्तर में इसका शिखर वाला भाग कई स्थानों पर खण्डित होता रहा जिसको समय–समय पर सीमेन्ट मौरंग की सहायता से जीर्णोद्धारित किया जाता रहा। छपरा शहर के भगवान बाज़ार मोहल्ले में स्थित यह पंच महादेव मन्दिर एक बड़े प्रांगण के मध्य में निर्मित है। छपरा–सीवान मुख्य सड़क मार्ग के दाहिने तरफ एक बड़ा सा लकड़ी का प्रवेश द्वार बना हुआ है जिसमें लोहे के मोटे–मोटे कंगूरे लगे हैं, यह देखने में अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक लग रहा है। इस प्रवेश द्वार के भीतर दोनों किनारों पर छोटे–छोटे कमरे बने हुए हैं जो सम्भवतः पुजारियों के रहे होंगे। आग बढ़ने पर सामने भव्य मन्दिर दिखलायी पड़ता है। मन्दिर के बायें एवं दायें तरफ घर बने हुए हैं जिनमें स्थानीय निवास करते हैं। इन स्थानीय निवासियों द्वारा ही इस मन्दिर की देख–रेख की जा रही है। मन्दिर को जंघा भाग से लेकर वरण्डिका तक सफेद चूने से रंग दिया गया है जिस कारण बहुत सी कलाकृतियाँ छिप गयी हैं। वर्तमान में छपरा का यह ऐतिहासिक मन्दिर पूर्णतः उपेक्षा का शिकार हो चुका है। यदि ऐसे ही चलता रहा तो आने वाली पीढ़ी अपने गौरव पूर्ण ऐतिहासिक धरोहर को नहीं देख पायेगी, न ही उसे अपनी सभ्यता और संस्कृति के विषय में कोई ज्ञान होगा। लेखक का ऐसा मानना है कि इस मन्दिर को भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा अपने संरक्षण में ले लेना चाहिए जिससे इस मन्दिर के स्थापत्य एवं इसकी ऐतिहासिकता के विषय में लोग चिरकाल तक जान सकें।

स्थानीय मान्यताएं एवं किंवदन्तियाँ

मन्दिर के पुरातात्त्विक सर्वेक्षण के दौरान स्थानीय बुजुर्गों एवं वरिष्ठ व्यक्तियों के साथ वार्तालाप से इस स्थल के विषय मे निम्नलिखित तथ्य सामने आते हैं –

1. इस मन्दिर के शिवलिंग पर प्रायः एक काला नाग लिपटा रहता है जिसके फण भाग पर त्रिशूल का अंकन है।

2. इस मन्दिर के परिसर में आने वाला व्यक्ति रात्रि के भयानक, भयावह एवं डरावने स्वप्न से मुक्त हो जाता है।

3. महाशिवरात्रि में रात्रि बारह बजे के पश्चात् शिवलिंग से दिव्य ज्योति निकलती है। इस अवसर पर सम्पूर्ण मन्दिर प्रकाशमान रहता है।

4. मन्दिर की रक्षा शिखर भाग में स्थित एक हाथ में पर्वत तथा दूसरे हाथ में गदा लिए वायु मार्ग से उड़ते हनुमान करते हैं।

5. इस मन्दिर का प्रसाद खाने से रोगी रोग मुक्त हो जाते हैं।

6. इस मन्दिर में आने से मन प्रसन्न एवं शरीर पुलकायमान हो जाता है, इत्यादि।

शोध प्रविधि

प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व विषय की अपनी अलग–अलग शोध प्रविधियाँ होती हैं जिन्हें ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक शोध प्रविधियाँ कहा जाता है। इनका प्रयोग शोध समस्या के आवश्यकतानुसार किया जाता है। छपरा के भगवान बाज़ार थाना मोहल्ले के पंचायतन शिव मन्दिर को प्रकाश में लाने के लिए सर्वेक्षात्मक प्रविधि (Surveying Method) का प्रयोग किया गया है।

प्रमुख उद्देश्य

इस मन्दिर को प्रकाश में लाना एवं इसका अभिलेखन ही इस सर्वेक्षणात्मक कार्य का प्रमुख उद्देश्य है।

शोध उपकरण

नमूना संग्रह विधि

नमूना संग्रह के लिए छपरा के भगवान बाज़ार थाना मोहल्ले के पंचायतन शिव मन्दिर की दीवारों, स्तम्भों छत की वितानों आदि का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण कार्य कर तथ्यों एवं आकड़ों का संग्रहण किया गया।

मुद्रित एवं अमुद्रित साहित्य

इस मन्दिर को प्रकाश में लाने के लिए छपरा जनपद से सम्बन्धित अनेक साहित्यिक एवं ऐतिहासिक ग्रन्थों एवं पुस्तकों का अध्ययन किया गया। विषय से सम्बन्धित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों (ग्रन्थों) का अध्ययन किया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न शोध–पत्र एवं स्थानीय पत्रिकाओं के साथ–साथ सोशल मीडिया, सरकारी तथा गैर–सरकारी दस्तावेजों का सहयोग लिया गया है।

साक्षात्कार

छपरा के भगवान बाज़ार थाना मोहल्ले के पंचायतन शिव मन्दिर के निवासियों से व्यक्तिगत साक्षात्कार के द्वारा इस मन्दिर के विषय में सूचनाएं एकत्रित की गयीं किन्तु महत्वपूर्ण सूचना का अभाव रहा जो सर्वेक्षणकर्ता के लिए दुःख की बात है। मन्दिर परिसर के आस–पास के क्षेत्र के विषय में जानकारी प्राप्त की गई। इसके अतिरिक्त सम्बन्धित लोक साहित्य एवं किंवदन्तियों को ज्ञात करने का प्रयास किया गया। उपरोक्त के अतिरिक्त टोपोशीट, डिजिटल कैमरा, जीपीएस, जनपद का मानचित्र, अन्वेषण से सम्बन्धित विभिन्न उपकरणों का भी प्रयोग किया गया।

संदर्भ

1. Saran district – Wikipedia *https://en.wikipedia.org › wiki › Saran_district*

2. एल. एस. एस. ओमल्ली, बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटिअर्स सारण, काल्पज पब्लिकेशन, न्यू इडिशन, 2019, पृ. 2–4

3. बी. एल. सिंह एवं राकेश रंजन, प्रथम दीक्षान्त समारोह, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, आर्टिकल, जिला सारण (छपरा) की गौरवशाली एवं समृद्ध विरासत, 2011, पृ. 33

4. जय नारायण पाण्डय, पुरातत्त्व विमर्श, बारहवां संस्करण, प्राच्य विद्या संस्थान, इलाहाबाद, पृ. 355–356

5. बी. एल. सिंह एवं राकेश रंजन, पूर्वोद्धृत, पृ. 33

6. **बिहार–सारण के गौरवशाली इतिहास पर बनेगी** ... www.khabarnonstop.com › 2016/12/12 › produce-docu...

7. बी. एल. सिंह एवं राकेश रंजन, पूर्वोद्धृत, पृ. 33

8. वही, पृ. 33

9. **सारन जिला–विकिपीडिया** *https://hi.wikipedia.org › wiki › सारन–जिला*

10. **जयप्रकाश नारायण–विकिपीडिया** *https://hi.wikipedia.org › wiki › जयप्रकाश–नारायण*

11. जय नारायण पाण्डेय, पूर्वोद्धृत, पृ. 58, दैनिक जागरण समाचार पत्र, अभ्युदय का धरोहर शीर्षक, पृ. 49–50, **चिरांद–विकिपीडिया** *https://hi.wikipedia.org › wiki › चिरांद*